Toppersnotes®
Unleash the topper in you

UPSC/PSC

सिविल सेवा परीक्षा

प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत

SIERRA INNOVATIONS

प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत

S.No.	Chapter Name	Page No.
1.	प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत	1
2.	पाषाण युग	6
3.	ताम्र पाषाणिक काल(3000 500BC)	10
4.	सिन्धु घाटी सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता)	14
5.	वैदिक काल (1500 600BC)	21
6.	बौद्ध धर्म और जैन धर्म	28
7.	महाजनपद काल (600 300 BC)	46
8.	मौर्य सम्राजय	53
9.	मौर्योत्तर काल	62
10	संगम युग	69
11.	गुप्त युग	74
12.	दक्कन के वकटक	80
13.	गुप्तोत्तर काल	81
14	पूर्व मध्यकालीन भारत (750 1200 AD)	89
15.	चोल साम्राज्य (850 1200 ईस्वी)	102
16.	संघर्ष का युग	111
17.	अरब आक्रमण	118
18.	दिल्ली सल्तनत	123

19.	**विजयनगर और बहमनी साम्राज्य**	**134**
20.	**मुगल साम्राज्य**	**146**
21.	**मराठा साम्राज्य और अन्य क्षेत्रीय राज्य**	**162**
22.	**मध्ययुगीन काल में धार्मिक आंदोलन**	**174**

1 CHAPTER प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत

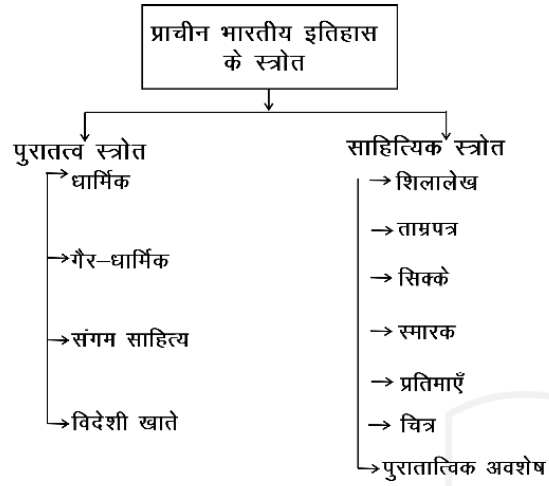

A. पुरातत्व स्रोत

- **मुद्राशास्त्र** - सिक्कों का अध्ययन।
- **पुरालेख**- अभिलेखों का अध्ययन।
- **पुरातत्व** = 'पुरालेख' + 'लोगिया' (पुरातन = प्राचीन और लोगिया = ज्ञान)।

1. शिलालेख / एपिग्राफ

- पुरातत्व स्रोतों का **सबसे महत्वपूर्ण, प्रामाणिक और विश्वसनीय हिस्सा।** तुलनात्मक रूप से कम पक्षपाती।
- **सबसे पुराने शिलालेख** - सम्राट अशोक- प्रमुख रूप से **ब्राह्मी लिपि में**।
- **अन्य महत्वपूर्ण शिलालेख –**

नाम	स्थान	वर्णन
नागनिका का शिलालेख	नानेघाट, **महाराष्ट्र**	सातवाहन राजा **सतकर्णी के बारे में**
नासिक शिलालेख	नासिक गुफाएँ, **महाराष्ट्र**	गौतमीपुत्र **सतकर्णी के बारे में**
प्रयाग प्रशस्ति/इलाहाबाद स्तंभ	इलाहाबाद, **उत्तर प्रदेश**	**समुद्रगुप्त के बारे में** हरिसेन द्वारा संस्कृत में लिखा गया
ऐहोल शिलालेख	**कर्नाटक**	बादामी के **चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय** के बारे में रविकीर्ति द्वारा लिखा गया।
हाथीगुम्फा शिलालेख	उदयगिरि, **ओडिशा**	**राजा खारवेल** के बारे में

2. ताम्र - पत्र

- **'भूमि-अनुदान' के लिए उत्कीर्ण** और अनुदानग्राही को जारी किया गया।
- **ताँबे की** 3 **प्लेटें**, ताँबे की गाँठ के माध्यम से एक-दूसरे से बंधी हुई।
- **ऊपरी और अंतिम भागों को उकेरा नहीं गया है** क्योंकि ये समय के साथ धुंधले हो जाते हैं।
- उस काल की **सामाजिक-आर्थिक स्थिति की जानकारी** देता है।
- **उदा**. सोहगौरा ताम्रलेख हमें गंभीर सूखे और भोजन की कमी की समस्या से निपटने के लिए अधिकारियों द्वारा किए गए उपायों के बारे में सूचित करता है।

3. सिक्के

- **व्यापार और वाणिज्यिक गतिविधियों** और **आर्थिक और तकनीकी विकास** के बारे में सूचित करता है।
- उल्लिखित तिथियाँ हमें **राजाओं के कालक्रम** के बारे में जानने में मदद करती हैं।
- **भारत के पहले सिक्के** - **'पंचमार्क** सिक्के' आहत / पंचिंग विधि से बनाए गए।
- **संभवतः व्यापारिक संघों द्वारा** चलाए गए थे - किसी **शासक द्वारा नहीं।**
- **सिक्कों** में **शुद्धता** का अनुपात **शासक की आर्थिक स्थिति** और उसके समय की व्याख्या करता है।
- **पहला सोने का सिक्का** - **इंडो-यूनानियों द्वारा** जारी किया गया ।
- **कुषाणों** द्वारा **शुद्धतम सोने के सिक्के** जारी किये गए ।
- **सबसे** ज्यादा लेकिन **अशुद्ध सोने** के **सिक्के गुप्तों द्वारा** जारी किये गए।

4. स्मारक

- इनका अध्ययन हमें **तकनीकी कौशल, जीवन स्तर, आर्थिक स्थिति** और उस **समय की स्थापत्य** शैली की **व्याख्या** करने में मदद **करता है।**
- **शासको** या **राजवंशो** की **समृद्धि का चित्रण** करता है।
- **3 प्रमुख शैलियाँ-**
  - उत्तर में **नागर शैली**।
  - दक्षिण में **द्रविड़ शैली**।
  - दक्कन में **वेसर शैली**।

5. प्रतिमाएँ

- **हड़प्पा मूर्तिकला -** पत्थर, स्टीटाइट, मिट्टी, टेराकोटा, चूना, कांसे, हाथी दांत, लकड़ी आदि से बनी ।
  - **उपयोग** - मूर्तियाँ, खिलौने, मनोरंजन ।
- **कांस्य प्रतिमाएँ** (हड़प्पा सभ्यता) और **खिलौने** (दैमाबाद)
- **मौर्यकालीन मूर्तियाँ** - **दीदारगंज** की **यक्षी** - लोगों की समसामयिक संपन्नता और सौन्दर्य बोध।
- **कनिष्क की मूर्ति**- राजा की **विदेशी उत्पत्ति** और **विदेशी** शैली की **पोशाक**, जैसे जूते, ओवरकोट आदि।

6. चित्र

- **चित्रों के प्रारंभिक उदाहरण**- **भीमबेटका** (मध्य प्रदेश) - मध्य पाषाण काल के गुफा-निवासियों द्वारा आसपास की प्रकृति के रंगों और औजारों का उपयोग करके बनाए गए ।
- **अजंता चित्रकला** - धार्मिक विचारधारा, आध्यात्मिक शांति, आभूषण, वेशभूषा, विदेशी आगंतुकों आदि के बारे में जानकारी प्रदान करती हैं।
- **चोल चित्रकला** - **चोल राजव्यवस्था** के **'दिव्य राजत्व' की अवधारणा** को प्रदर्शित करती हैं।

7. पुरातत्व अवशेष

(i) मृदभांड

- **आद्य-इतिहास से प्रारंभिक मध्य काल** तक मुख्य उपकरण।
- **विभिन्न वस्तुओं से बने** जैसे कटोरे, प्लेट, बर्तन आदि में।
- **संस्कृति**, **आकार**, **वस्त्र**, **सतह-उपचार** (वस्त्र, रंग, डिजाइन, पेंटिंग), मृदभांड बनाने की **तकनीक** आदि के **अनुसार विभेदित।**
- **विशिष्ट संस्कृति**/अवधि के लिए **विशिष्ट मृदभांड** समर्पित किये गए है।

(ii) मणिकाएँ

- **विभिन्न सामग्रियों**, जैसे, पत्थर, अर्द्ध-कीमती पत्थर (जैसे एगेट, कैल्सेडनी, क्रिस्टल, फ़िरोज़ा, लैपिस-लाजुली), कांच, टेरा कोटा, हाथीदांत, खोल, धातुओं जैसे सोना, तांबा आदि **से बने** ।
- **विभिन्न आकार** जैसे गोल, चौकोर, बेलनाकार, बैरल के आकार **के** ।
- एक **विशिष्ट अवधि** के **तकनीकी विकास** और **सौंदर्यबोध** को जानने **के लिए एक स्रोत के रूप में इस्तेमाल** किए जा सकते हैं।

(iii) जीव अवशेष/हड्डियाँ

- **उत्खनन** से **बड़ी मात्रा** में **हड्डियों** या **जीवों अवशेषों** का पता चला है।
- वे उस **विशेष स्थल के आसपास के पारिस्थितिकी तंत्र पर प्रकाश** डालते हैं।
- **संबंधित लोगों** की **आहार संबंधी आदतों को समझने में मदद** करते हैं।

(iv) पुष्प अवशेष

- **संबंधित लोगों** की **ऐतिहासिक पारिस्थितिकी** और **आहार संबंधी आदतों** के बारे में **जानकारी** देते हैं।

B. साहित्यिक स्रोत

1. धार्मिक स्रोत

- **आधार स्रोत**: ब्राह्मण ग्रंथ जैसे वैदिक ग्रंथ, सूत्र, स्मृति, पुराण और महाकाव्य।

वैदिक ग्रंथ	• **ऋग्वेद**- **सबसे पुराना** - हमें ऋग्वैदिक समाज के बारे में बताता है। • **साम वेद**, **यजुर्वेद** और **अथर्ववेद** - **उत्तर वैदिक काल** के समाज **के बारे में** जानकारी देता है। • **900 साल** (**1500B.C-600B.C**) **का इतिहास** बनाता है । • **आर्यों** की उत्पत्ति, उनकी राजनीतिक संरचना, उनके समाज, आर्थिक गतिविधियों, धार्मिक दृष्टिकोण, सांस्कृतिक उपलब्धियों आदि **के बारे में जानकारी देता है**।
सूत्र	• सूत्र में पिरोए गए सुन्दर मोतियों की तरह **शब्द या स्तोत्र का संकलन**। • **वैदिक काल की जानकारी** देता है। • **छह भाग**: शिक्षा, व्याकरण, छंद, कल्प, निरुक्त और ज्योतिष
उपवेद	• **आयुर्वेद** - चिकित्सा विज्ञान से संबंधित - ऋग्वेद का उपवेद। • **गंधर्व वेद** - संगीत से संबंधित- सामवेद का उपवेद।

	• **धनुर वेद** - युद्ध कौशल, हथियार और गोला-बारूद से संबंधित- यजुर्वेद का उपवेद। • **शिल्प वेद** - मूर्तिकला और वास्तुकला से संबंधित - अथर्ववेद का उपवेद।

स्मृति ग्रंथ	• **मनुस्मृति** - सबसे पुराना स्मृति पाठ (200B.C- 200A.D)। • **याज्ञवल्क्य स्मृति** (100A.D - 300A.D) के बीच संकलित। • **नारद स्मृति** (300A.D-400A.D) और **पाराशर स्मृति** (300A.D-500A.D) - गुप्तों की सामाजिक और धार्मिक स्थितियों के बारे में जानकारी देता है।
बौद्ध साहित्य	• **पिटक** - **सबसे पुराने** बौद्ध ग्रंथ। ○ भगवान **बुद्ध के निर्वाण प्राप्त करने के बाद** संकलित। ○ **3 प्रकार**- ■ **सुत्त पिटक**- धार्मिक विचारधारा और बुद्ध की शिक्षाएँ शामिल हैं। ■ **विनय पिटक**- बौद्ध संघ के नियम शामिल हैं। ■ **अभिधम्म पिटक**- बौद्ध दर्शन शामिल हैं। • **जातक कथाएँ** - भगवान **बुद्ध के पिछले जन्म से संबंधित उपाख्यान** - संकलन पहली शताब्दी ईसा पूर्व में शुरू हुआ था लेकिन वर्तमान रूप दूसरी शताब्दी ईस्वी में संकलित किया गया था। • **मिलिंदपन्हो** - बौद्ध ग्रंथ - ग्रीक शासक **मिनांडर** (**मिलिन्द**) **और बौद्ध संत नागसेना के बीच दार्शनिक संवाद** के बारे में जानकारी देता है। • **दिव्यावदान** - **चौथी शताब्दी ईस्वी** में पूर्ण रूप से लिखा गया - **विभिन्न शासकों** के बारे में जानकारी। • **आर्यमंजुश्रीमुलकल्प** - बौद्ध दृष्टिकोण से **गुप्त साम्राज्य के विभिन्न शासकों के बारे में** जानकारी। • **अंगुत्तरनिकाय** - **सोलह महाजनपदों के नाम** देता है।
सिंहली ग्रंथ	• इसमें **दीपवंश** और **महावंश** - बौद्ध ग्रंथ शामिल हैं। • **दीपवंश** – 4वी शताब्दी ई. • **महावंश** - 5वीं शताब्दी ई. • उस समय के **सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन के बारे में जानकारी** प्रदान करता है।
	• **भारत और विदेशी राज्यों के सांस्कृतिक संबंधों के बारे में** जानकारी प्रदान करता है।
जैन ग्रंथ	• **मुख्य ग्रंथ**- आगम ग्रंथ। • **कुल ग्रंथ**- 12 । • **आचारंगसूत्र** - आगम ग्रंथ का हिस्सा - **महावीर की शिक्षाओं** पर आधारित है और जैन संतों के आचरण के बारे में बात करता है। • **व्याख्या प्रज्ञापति / भगवती सूत्र** - **महावीर के जीवन** के बारे में । • **नयाधम्मकहा** - भगवान **महावीर की शिक्षाओं** का संकलन। • **भगवतीसूत्र** - 16 **महाजनपदों के बारे में** जानकारी प्रदान करता है। • **भद्रबाहुचरित** - जैन आचार्य **भद्रबाहु** और **चंद्रगुप्त मौर्य के जीवन पर प्रकाश** डालता है। • **परिशिष्टपर्वन** - सबसे महत्वपूर्ण जैन ग्रंथ - **हेमचंद्र द्वारा** 12 **वीं शताब्दी ईस्वी** में लिखा गया।
पुराण	• **स्मृति के बाद संकलित।** • मुख्य रूप से 18 । • **प्राचीन पुराण** - मार्कंडेय पुराण, वायु पुराण, ब्रह्म पुराण, विष्णु पुराण, भागवत पुराण और मत्स्य पुराण। • **बाकी बाद में बनाए गए थे।** • **मत्स्य**, **वायु** और **विष्णु पुराणों** में प्राचीन **भारतीय राजवंशों की जानकारी** मिलती हैं । • **महाभारत के युद्ध के बाद** शासन करने वाले राजवंशों **का एकमात्र उपलब्ध स्रोत।** • **विभिन्न राजवंशों** और **उनके पदानुक्रम** (निम्नतम से उच्चतम तक) **का कालक्रम** प्रदान करता है**।**
महाकाव्य	• **ब्राह्मण ग्रंथों** का एक **हिस्सा** • **सबसे महत्वपूर्ण**- **महाभारत** और **रामायण।** • **रामायण** - **वाल्मीकि** द्वारा रचित - मौर्य काल के बाद। • **महाभारत** - **वेद व्यास** द्वारा रचित - गुप्त काल में पूरा हुआ - **शुरू में** नाम **जय संहिता / भारत** रखा गया।

2. गैर-धार्मिक स्त्रोत

- **समाज के** लगभग सभी **पहलुओं पर प्रकाश** डालता है ।
- **कुछ गैर-धार्मिक ग्रंथ** हैं -
  - **पाणिनि की अष्टाध्यायी** - भारत का **सबसे पुराना व्याकरण**/साहित्य - **मौर्य-पूर्व** काल की राजनीतिक**,** सामाजिक और धार्मिक **स्थिति की जानकारी।**
  - **मुद्राराक्षस**- **विशाखदत्त** द्वारा लिखित- **मौर्य काल के बारे में** जानकारी प्रदान करता है।
  - **अर्थशास्त्र** - **कौटिल्य** / विष्णुगुप्त / चाणक्य द्वारा लिखित - 15 **भागों में विभाजित** - भारतीय राजनीतिक व्यवस्था, मौर्य युग की स्थिति के बारे में जानकारी प्रदान करता है।
  - **पतंजलि का महाभाष्य** और **कालिदास का मालविकाग्निमित्रम** - **'शुंग वंश'** के बारे में जानकारी।
  - **वात्स्यायन का कामसूत्र** - सामाजिक जीवन, शारीरिक संबंध, पारिवारिक जीवन आदि की जानकारी प्रदान करता है।
  - **शूद्रक का 'मृच्छकटिकम्'** और **दण्डिन का 'दशकुमारचरित'** - उस काल के सामाजिक जीवन की जानकारी प्रदान करता है।

3. संगम साहित्य

- **प्राचीनतम दक्षिण भारतीय साहित्य**।
- **इकट्ठे हुए कवियों द्वारा** निर्मित (संगम)।
- **डेल्टाई तमिलनाडु** में रहने वाले लोगों के **सामाजिक**, **आर्थिक** और **राजनीतिक जीवन के बारे में** बहुमूल्य जानकारी प्रदान करता है।
- इसमें **'सिलप्पादिकारम'** और **'मणिमेकलई' शामिल** हैं।

संगम साहित्य

संगम साहित्य	लेखक	विषय / प्रकृति / संकेत
अगत्तीयम	अगस्त्य	अक्षरों के व्याकरण पर एक कार्य
तोल्काप्पियम (तमिल व्याकरण)	तोलकापिय्यार	व्याकरण और कविता पर एक ग्रंथ
एट्टुकाई	-	मेलकन्नक्कू संयुक्त रूप
पट्टुपट्टू	-	मेलकन्नक्कू संयुक्त रूप
पेटिनेंकिलकनक्कू (18 लघु कार्य)	-	एक उपदेशात्मक कार्य
कुरल (मुप्पाल)	तिरुवल्लुवर	राजनीति, नैतिकता, सामाजिक मानदंडों पर एक ग्रंथ
शिलप्पादिकारम	इलांगो आदिगल	कोवलन और माधवी की एक प्रेम कहानी
मणिमेकलई	सीतलै सत्तनार	मणिमेकलई का साहसिक कार्य
सिवाका चिंतामणि	तिरुत्तकरदेव	एक संस्कृत ग्रंथ
भारतम	पेरुदेवनार	अंतिम महाकाव्य
पन्निरुपदलम (व्याकरण)	अगस्त्य के 12 शिष्य	पुरम साहित्य पर एक व्याकरणिक कार्य

4. विदेशी खाते

- **ग्रीक**, **रोमन**, **चीनी** और **अरब यात्रियों** के लेखन से मिलकर बने है।
- **राजनीतिक** और **सामाजिक परिस्थितियों पर प्रकाश** डालते है।
- **ग्रीक या रोमन लेखक -**
  - **हेरोडोटस**-
    - **विश्व के प्रथम इतिहासकार** माने जाते हैं।
    - **फारसियों की तरफ से लड़ने वाले भारतीय सैनिकों का उल्लेख** किया।
  - **मेगस्थनीज**-
    - **सेल्यूकस निकेटर के राजदूत,** चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में तैनात।
    - **कार्य** - **इंडिका** - **पाटलिपुत्र** के नक्शे **का विवरण** देता है।
    - **सामाजिक संरचना**, **जाति-व्यवस्था**, **जाति-संबंध** आदि के ऊपर **उल्लेख।**
    - मूल इंडिका खो गई है।
  - **एरिथ्रियन सागर का पेरिप्लस**-
    - इसे कथित तौर पर **मिस्र के तट पर** एक **मछुआरे ने लिखा** था।
    - **प्रारंभिक ऐतिहासिक काल** के दौरान **भारत-रोमन व्यापार** पर निष्पक्ष और वस्तुनिष्ठ **जानकारी** देता है।
    - **भारत के तट-रेखा पर बंदरगाहों**, **भारत** में **व्यापार केंद्रों, व्यापार-मार्गों** और बंदरगाहों को जोड़ने, **केंद्रों के बीच** की **दूरी**, **व्यापार** की **वस्तुओं**, **व्यापार** की वार्षिक **मात्रा**, **जहाजों के प्रकार** आदि **के बारे में** सूचित करता है।
- **चीन**
  - **फाह्यान** (**फा जियान**)-
    - **गुप्त काल के दौरान** भारत आए।
    - **बौद्ध भिक्षु** - देवभूमि (अर्थात् भारत) से ज्ञान प्राप्त करने और बौद्ध तीर्थ केन्द्रों का दौरा करने के लिए भारत आए।
  - **ह्वेनसांग** (**जुआन जांग**)-
    - **हर्षवर्धन के** शासनकाल के **दौरान** भारत का दौरा किया।
    - **बौद्ध तीर्थ स्थलों का भ्रमण** किया, **नालंदा विश्वविद्यालय में ठहरे।**

- **बौद्ध धर्म का अध्ययन किया**, मूल बौद्ध रचनाएँ पढ़ीं, मूल पांडुलिपियाँ और स्मृति चिन्ह एकत्र किए, प्रतियां बनाईं, **हर्ष की सभा में भाग लिया**।
- चीन में, **उन्होंने 'सी-यू-की'** (पश्चिमी क्षेत्रों पर ग्रेट टैंग रिकॉर्ड्स) **लिखा** - भारत में उनके अनुभव का विशद विवरण डेटा हैं।
    - **राजाओं विशेष रूप से हर्ष** और उनकी उदारता, भारत में लोगों और विभिन्न क्षेत्रों के रीति-रिवाजों, जीवन शैली आदि **की जानकारी** देता है।

- **अन्य क्रॉनिकल्स -**
    - **तारानाथ** (तिब्बती बौद्ध भिक्षु) द्वारा **कंग्यूर** और **तंग्यूर** - **प्रारंभिक मध्यकालीन भारत का लेखा-जोख**

Toppersnotes
Unleash the topper in you

2 CHAPTER पाषाण युग

- **प्रागैतिहासिक काल** - **कोई लिखित प्रमाण नहीं।**
- **सूचना का मुख्य स्रोत**- पुरातात्विक उत्खनन।
- **पल्लवरम हैंडैक्स** - भारत में **पहला पुरापाषाण उपकरण** - रॉबर्ट ब्रूस फूट (1863 ईस्वी) द्वारा खोजा गया - उन्होंने दक्षिण भारत में बड़ी संख्या में पूर्व-ऐतिहासिक स्थलों की भी खोज की ।
- यह काल **मानव सभ्यता का प्रारम्भिक काल** माना जाता है।
- इस काल को **तीन भागों में विभाजित** किया जा सकता है
  1. **पुरा पाषाण काल** (Paleolithic Age)
  2. **मध्य पाषाण काल** (Mesolithic Age)
  3. **नव पाषाण काल** अथवा उत्तर पाषाण काल (Neolithic Age)

1. पुरापाषाण काल (Paleolithic Age)

- यूनानी भाषा में Palaios प्राचीन एवं Lithos पाषाण के अर्थ में प्रयुक्त होता था।
- यह काल **आखेटक एवं खाद्य-संग्रहण काल के रूप में** भी **जाना जाता** है।
- अभी तक **भारत में पुरा पाषाणकालीन मनुष्य के अवशेष** कहीं से भी **नहीं मिले हैं**, जो भी अवशेष के रूप में मिला है, वह उस समय प्रयोग में लाये जाने वाले पत्थर के उपकरण हथियार हैं।
- **प्राप्त उपकरणों के आधार पर** यह अनुमान लगाया है कि ये लगभग **2,50,000 ई.पू.** के होंगे।
- हाल में **महाराष्ट्र के 'बोरी' नामक स्थान पर की गई खुदाई में मिले अवशेषों** से ऐसा अनुमान लगाया जा रहा है कि इस पृथ्वी पर **'मनुष्य' की उपस्थिति लगभग 14 लाख वर्ष पुरानी** है।
- **गोल पत्थरों से बनाये गये प्रस्तर उपकरण** मुख्य रूप से **सोहन नदी घाटी में मिलते हैं।**
- **सामान्य पत्थरों के कोर तथा फ़्लॅक्स प्रणाली द्वारा बनाये गये** औजार मुख्य रूप से मद्रास, वर्तमान चेन्नई में पाये गये हैं।
- इन दोनों प्रणालियों से निर्मित **प्रस्तर के औजार सिंगरौली घाटी, मिर्ज़ापुर एवं बेलन घाटी, प्रयागराज में मिले** हैं।
- **मध्य प्रदेश के भोपाल के पास भीम बेटका में मिली पर्वत गुफायें** एवं शैलाश्रय भी महत्त्वपूर्ण हैं।
- इस समय के मनुष्यों का जीवन **पूर्णरूप से शिकार पर निर्भर** था।
- वे **अग्नि के प्रयोग से अनभिज्ञ** थे। **सम्भवतः** इस समय के **मनुष्य नीग्रेटो जाति के थे।**
- **भारत में पुरापाषाण युग को औजार-प्रौद्योगिकी के आधार पर तीन अवस्थाओं** में **बांटा जाता हैं**-

काल	अवधि	अवस्थाएं
निम्न पुरापाषाण काल	100,000 ई.पू.	हस्तकुठार और विदारण उद्योग
मध्य पुरापाषाण काल	100,000 ई.पू. 40,000 ई.पू.	शल्क (फ़्लॅक्स) से बने औज़ार
उच्च पुरापाषाण काल	40,000 ई.पू. 10,000 ई.पू.	शल्कों और फ़लकों (ब्लेड) पर बने औजार

A. निम्न पुरा पाषाण काल

- **विशेषताएं:**
  - **अधिकतम समय अवधि** (पूरे निम्न प्लीस्टोसिन और मध्य प्लीस्टोसिन युग की अधिकतम अवधि को कवर करता है)।
  - **नदी घाटियों का निर्माण** ।
  - **प्रारंभिक पुरुष जल स्त्रोत के पास रहना पसंद करते थे**, क्योंकि पत्थर के हथियार/उपकरण मुख्य रूप से नदी घाटियों में या उसके आस-पास पाए जाते हैं।
  - **मुख्य रूप से पश्चिमी यूरोप** और **अफ्रीका में** फैला हुआ ।
  - **प्रारंभिक पत्थर के औजारों के साक्ष्य** - पश्चिमी यूरोप - निम्न प्लीस्टोसिन में पहले अंतर-हिमनद चरण के निक्षेप ।
  - **खानाबदोश जीवन** शैली जीते थे।
  - **शिकारी और भोजन संग्रहकर्ता।**
  - **निएंडरथल जैसे पैलेंथ्रोपिक पुरुषों का योगदान (होमिनिड/मानवनुमा विकास का तीसरा चरण)**
  - **सबसे पुराने निम्न पुरापाषाण स्थलों में से एक महाराष्ट्र में बोरी है।**
- **उपकरण:**
  - **M, उपकरण- चूना पत्थर से बने** - हाथ की कुल्हाड़ी, चॉपर और क्लीवर - खुरदरे और भारी।

- **पहले पाषाण औजारों के निर्माण** को ओल्डोवन परंपरा के रूप में जाना जाता था।

- **प्रमुख स्थल:**
  - सोन घाटी (वर्तमान पाकिस्तान में)
  - थार रेगिस्तान
  - कश्मीर
  - मेवाड़ का मैदान
  - सौराष्ट्र
  - गुजरात
  - मध्य भारत
  - दक्कन का पठार
  - छोटानागपुर पठार
  - कावेरी नदी का उत्तरी भाग
  - उत्तर प्रदेश में बेलन घाटी

दो महत्वपूर्ण संस्कृतियां -

- **सोहन संस्कृति:**
  - **सिंधु की** एक **सहायक नदी सोहन** नदी के नाम **पर**।
  - **स्थल**-उत्तर-पश्चिम भारत और पाकिस्तान में शिवालिक पहाड़ियाँ।
  - **निम्न पुरापाषाणकालीन पत्थर के औजार** मिले।
  - **पशु अवशेष** - घोड़ा, भैंस, सीधे दांत वाला हाथी और दरियाई घोड़ा।
  - **कंकड़ उपकरण** और **चॉपर के निक्षेप** मिले।
- **एचुलियन संस्कृति / मद्रासी संस्कृति:**
  - **फ्रांसिसी स्थल सेंट अचेउल के नाम पर।**
  - **भारतीय उपमहाद्वीप का पहला प्रभावी उपनिवेशीकरण।**
  - **भारत में निम्न पुरापाषाणकालीन बस्तियों के समान।**
  - **हैण्ड-एक्स** और **क्लीवर के भंडार**

B. मध्य पुरापाषाण काल

- **विशेषताएं-**
  - मुख्य रूप से **मनुष्य के प्रारंभिक रूप- निएंडरथल से जुड़ा हुआ** है।
  - आग के उपयोग के साक्ष्य।
  - मध्य पुरापाषाण काल का मनुष्य मेहतर था, लेकिन शिकार और संग्रहण के बहुत कम साक्ष्य मिले हैं।
  - दफनाने से पहले मृतकों को चित्रित किया जाता था।
  - कुछ उपकरण प्रकारों का त्याग कर और उपकरण निर्माण की नई तकनीकों को शामिल करके ऐचुलियन संस्कृति में धीमा परिवर्तन हुआ।
- **उपकरण -**
  - **छोटे, पतले और हल्के उपकरण।**
  - **मुख्य रूप से बोर, पॉइंट और स्क्रेपर्स आदि बनाने के लिए उपयोग किए जाने वाले फलैक्स पर निर्भर।**
  - **इस अवधि में कंकड़ उद्योग भी देखा जा सकता है।**
  - **खोजे गए पत्थर बहुत छोटे / सूक्ष्म पाषाण थे।**
  - **क्वार्टजाइट, क्वार्ट्ज और बेसाल्ट की जगह चर्ट और जैस्पर जैसे महीन दाने वाली सिलिकाम शैलों ने ले ली।**
  - **मध्य भारत और राजस्थान में कई जगहों पर टूल फैक्ट्रियाँ पाई जाती है।**
  - **इस युग की अधिकांश विशेषताएं निम्न पुरापाषाण काल के समान हैं ।**
- **महत्वपूर्ण स्थल:**
  - उत्तर प्रदेश में बेलन घाटी
  - लूनी घाटी (राजस्थान)
  - सोन और नर्मदा नदियाँ
  - भीमबेटका
  - तुंगभद्रा नदी घाटियाँ
  - पोटवार पठार (सिंधु और झेलम के बीच)
  - संघो गुफा (पेशावर, पाकिस्तान के पास)

C. उत्तर पुरापाषण काल

- **विशेषताएँ** -
  - **होमो सेपियन्स की उपस्थिति।**
  - **कला और रीति-रिवाजों को दर्शाने वाली मूर्तियों और अन्य कलाकृतियों की व्यापक उपस्थिति।**
  - **राजस्थान, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र में 40 से अधिक स्थलों पर शुतुरमुर्ग के अंडे के छिल्को की खोज**
  - **ऊंचाई पर और उत्तरी अक्षांशों में अत्यधिक ठंडी और शुष्क जलवायु।**
  - **उत्तर पश्चिम भारत में मरुस्थलों का व्यापक निर्माण**
  - **पश्चिमी भारत के जल अपवाह तंत्र लगभग खत्म हो गए और नदी के जलमार्ग "पश्चिम की ओर" स्थानांतरित हो गए।**
  - **वनस्पति आवरण में कमी।**
  - **मानव आबादी को जंगली खाद्य संसाधनों का सामना करना पड़ा- यही कारण है कि ऊपरी पुरापाषाण स्थल शुष्क और अर्द्ध-शुष्क क्षेत्रों में बहुत सीमित हैं।**

- **उपकरण** -
  - **हड्डी के औज़ार** - सुई, मछली पकड़ने के उपकरण, हार्पून, ब्लेड और बरिन उपकरण।
  - **तकनीकों के शोधन और तैयार उपकरण रूपों के मानकीकरण** के संबंध में एक चिह्नित क्षेत्रीय विविधता देखने को मिली।
  - **ग्राइंडिंग स्टैब्स** भी पाए - उपकरण उत्पादन की तकनीक में प्रगति।
- **प्रमुख स्थल:**
  - भीमबेटका (भोपाल के दक्षिण में) - हाथ की कुल्हाड़ी और क्लीवर, ब्लेड, खुरचनी यहाँ पाए गए हैं।
  - बेलन
  - सोन
  - छोटा नागपुर पठार (बिहार)
  - महाराष्ट्र
  - ओडिशा
  - आंध्र प्रदेश में पूर्वी घाट
  - अस्थि औज़ार केवल आंध्र प्रदेश में कुरनूल और मुच्छतला चिंतामणि गवी की गुफा स्थलों पर पाए गए है

2. मध्य पाषाण काल (Middle Stone Age)

- **ग्रीक शब्दों से व्युत्पन्न - 'मेसो' और 'लिथिक'** उर्फ 'मध्य पाषाण युग'।
- **यह होलोसीन युग** से सम्बन्धित ।
- **पैलियोलिथिक** और **नवपाषाण काल के बीच संक्रमणकालीन अवधि** ।
- **विशेषताएँ -**
  - गर्मियों में भारी वर्षा और सर्दियों में मध्यम वर्षा वाली **गर्म जलवायु**।
  - शुरू में **शिकारी** और **संग्रहणकर्ता** , लेकिन **बाद में पशुपालन** और **खेती** करने लगे ।
  - **आदिम खेती** और **बागवानी शुरू** हुई।
  - **पालतू** बनाने वाला **पहला जानवर** - **कुत्ते** का **जंगली पूर्वज।**
  - **भेड़** और **बकरियां**- **सबसे आम पालतू** जानवर।
  - **लोग गुफाओं** और **खुले मैदानों** के साथ-साथ **अर्द्ध-स्थायी बस्तियों में रहते थे**।
  - **लोग परलोक में विश्वास करते थे** और इसलिए मृतकों को खाद्य पदार्थों और अन्य सामानों के साथ दफनाते थे ।
  - **लोग जानवरों की खाल से बने कपड़े पहनने लगे।**
  - इस अवधि में **गंगा के मैदानों का पहला मानव उपनिवेश स्थापित** हुआ ।
  - **अंतिम चरण** - खेती की शुरुआत
- **औजार** - **सूक्ष्म पाषाण -**
  - **ज्यामितीय और गैर-ज्यामितीय आकृतियों** में गूढ़-क्रिस्टली सिलिका, कैल्सेडनी या चर्ट से बने ।
  - **मिश्रित औजार**, **भाला**, **तीर** और **दरांती** बनाने **के लिए उपयोग** ।
  - ये **औजार छोटे जानवरों** और **पक्षियों का शिकार** करने में सक्षम बनाते थे।
- **चित्र -**
  - **कला प्रेमी** और **इतिहास** में **रॉक कला/ शैल चित्रकला की स्थापना** की।
  - **भारत में पहली शैल चित्र** - 1867 में सोहागीघाट (उत्तर प्रदेश) में मिली।
  - **विषयवस्तु**- जंगली जानवर और शिकार के दृश्य, नृत्य और भोजन संग्रह।
  - **चित्रकला में ज्यादातर लाल गेरू** लेकिन कभी-कभी **नीले-हरे, पीले या सफेद रंगों का इस्तेमा**ल किया गया है।
  - **सांपों का** कोई **चित्रण नहीं**।
  - **भीमबेटका शैल चित्र धार्मिक प्रथाओं** के विकास **के बारे में** एक अंदाजा देते हैं और लिंग के आधार पर श्रम विभाजन को भी दर्शाते हैं। पुरुषों को शिकार करते हुए दिखाया गया है जबकि महिलाओं को संग्रहण करते और खाना बनाते हुए दिखाया गया है।
- **महत्वपूर्ण स्थल** -
  - **बागोर (राजस्थान)-**
    - **भारत में सबसे बड़ा और सबसे अच्छी तरह से प्रलेखित मध्यपाषाण स्थलों** में से एक।
    - कोठारी नदी पर।
    - **पशुओं को पालतू बनाने का सबसे पहला प्रमाण।**
  - **महादहा, दमदमा, सराय नाहर राय (उत्तर प्रदेश) -**
    - **मानव कंकाल** के साक्ष्य।
    - **महादहा में**, एक **पुरुष** और एक **महिला को** एक **साथ दफनाया** गया था।
    - एक कब्रगाह में **कब्र देवता** के रूप में एक **हाथीदांत का पेंडेंट** पाया गया।
  - **भारत भर में मध्यपाषाण शैल चित्र स्थल-**
    - मध्य भारत जैसे भीमबेटका गुफाएं, खारवार, जौरा और कठोटिया (एमपी), सुंदरगढ़
    - संबलपुर (ओडिशा)
    - एजुथु गुहा (केरल)।
  - **लंघनाज (गुजरात) और बिहारनपुर (पश्चिम बंगाल)-**
    - लंघनाज- जंगली जानवरों (गैंडा, काला हिरण आदि) की हड्डियाँ।
    - कई मानव कंकाल
    - बड़ी संख्या में सूक्ष्म पाषण

3. नव पाषाण अथवा उत्तर पाषाण काल

- साधरणतया इस काल की **अवधि 3500 ई.पू. से 1000 ई.पू. के बीच** मानी जाती है।
- यूनानी भाषा का Neo शब्द नवीन के अर्थ में प्रयुक्त होता है। इसलिए इस काल को 'नवपाषाण काल' भी कहा जाता है।
- **विशेषताएँ -**
  - **होलोसीन भूवैज्ञानिक युग के अंतर्गत** आता है।
  - **'नियोलिथिक क्रांति'** (वी-गॉर्डन चाइल्ड द्वारा) के नाम से भी जाना जाता है। क्योंकि **इसने मनुष्य के सामाजिक और आर्थिक जीवन में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन** किए।
  - **आदमी खाद्य संग्रहकर्ता से खाद्य उत्पादक बन गया।**
  - **लिंग** और **उम्र के आधार पर श्रम** का **विभाजन**।
- **उपकरण और हथियार-**
  - **परिष्कृत** और घिसे हुए पाषण हथियार ।
  - **उत्तर-पश्चिमी-** घुमावदार धार वाली आयताकार कुल्हाड़ियाँ।
  - **उत्तर-पूर्वी** - आयताकार हत्थे और कभी-कभी कंधे वाले कुदाल के साथ पॉलिश पत्थर की कुल्हाड़ी।
  - **दक्षिणी**- अंडाकार सिरों और नुकीले हत्थे वाली कुल्हाड़ी।
- **कृषि -**
  - **रागी, चना** (कुलती) **और फल** उगाए गए।
  - साथ ही पालतू पशु, भेड़ और बकरियां भी पाले गए।56
- **मृदभांड -**
  - **पहले हाथ से बने मृदभांड** देखे गए और फुट व्हील का इस्तेमाल देखा गया।
  - धूसर मृदभांड और पोलिशदार काले मृदभांड और शामिल हैं।
- **आवास-**
  - लोग मिट्टी और घास-फूंस से बने **आयताकार या गोलाकार घरों** में रहते थे।
  - उस समय के मनुष्य **नाव बनाना और कपास और ऊन से कपड़ा बुनना** आता था ।
  - मुख्य रूप से **पहाड़ी नदी घाटियों, शैल आश्रयों और पहाड़ी ढलानों में** बसे हुए थे।

नवपाषाण संस्कृति के दो चरण-

- **एसेरैमिक-** सिरेमिक का कोई सबूत नहीं।
- **सेरैमिक-** मिट्टी के बर्तनों, घरों, तांबे के तीरों, काले मृदभांडों , चित्रित मृदभांडों के साक्ष्य।

महत्वपूर्ण नवपाषाण स्थल

- **कोल्डीहवा (प्रयागराज के दक्षिण में स्थित)** – अपरिष्कृत हस्त निर्मित मृदभांडों के साथ गोलाकार झोपड़ियों का प्रमाण।
- **महागरा -** विश्व में चावल की खेती का सबसे प्राचीन प्रमाण।
- **मेहरगढ़** (बलूचिस्तान, पाकिस्तान) **-** सबसे पुराना नवपाषाण स्थल, जहां लोग धूप में सुखाई गई ईंटों से बने घरों में रहते थे और कपास और गेहूं जैसी फसलों की खेती करते थे।
- **बुर्जहोम** (कश्मीर) **-** घरेलू कुत्तों को उनके मालिकों के साथ उनकी कब्रों में दफनाया जाता था, लोग गड्ढों में रहते थे और परिष्कृत पाषाणों और हड्डियों से बने औजारों का इस्तेमाल करते थे।
- **गुफकराल** (कश्मीर) **-** शाब्दिक अर्थ "कुम्हार की गुफा"। यह नवपाषाण स्थल लोगो द्वारा गड्ढे में रहने, पत्थर के औजारों और कब्रिस्तानों के लिए प्रसिद्ध है।
- **चिरंद** (बिहार) **-** सींगों से बने हड्डी के औजार।
- **नेवासा -** सूती कपड़े के साक्ष्य।
- **पिकलीहाल, ब्रह्मगिरि, मस्की, टक्कलकोटा, हल्लूर (कर्नाटक) -** राख के टीले की खोज।

विन्ध्य की बेलन घाटी में **चोपानी मांडों** और **नर्मदा घाटी** के **मध्य भाग** में, **तीनों चरणों** (पुरापाषाण से नवपाषाण तक) **के साक्ष्य** पाए गए हैं- इस स्थल से **पशु अस्थि जीवाश्मों की खोज** भी हुई है।

3 CHAPTER

ताम्र-पाषाणिक काल (3000-500BC)

- जिस काल में मनुष्य ने **पत्थर और तांबे के औज़ारों का साथ-साथ प्रयोग** किया, उस काल को 'ताम्र-पाषाणिक काल' कहते हैं।
- **सर्वप्रथम** जिस **धातु** को औज़ारों में प्रयुक्त किया गया वह थी – **'तांबा'।**
- ऐसा माना जाता है कि **तांबे का सर्वप्रथम प्रयोग क़रीब 5000 ई.पू. में किया गया**।

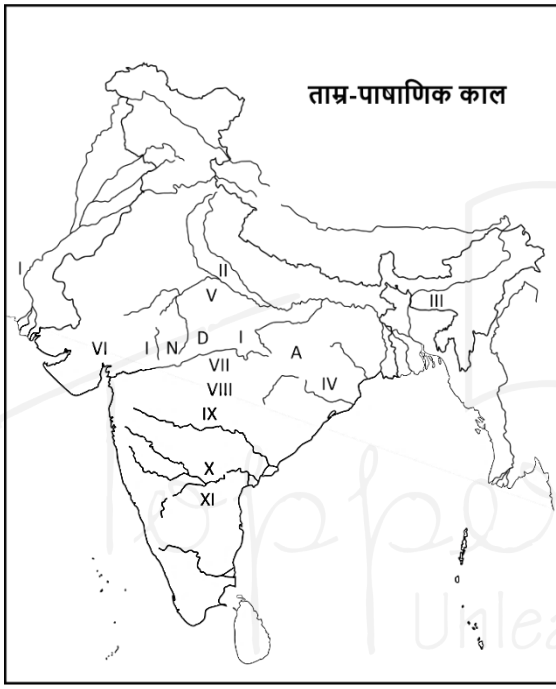

निम्नलिखित ताम्रपाषाण स्थलों को क्षेत्रवार दिखाया गया है:
I. सिंधु प्रणाली
1. मोहनजोदड़ो 2. हड़प्पा 3. रोपड़ 4. सूरतगढ़
5. हनुमानगढ़ 6. चन्हू-दड़ो 7. झुकर 8. आमरी
II गंगा प्रणाली
1. कौशाम्बी 2. आलमगीरपुर
III. ब्रह्मपुत्र प्रणाली
IV. महानदी प्रणाली
V. चंबल प्रणाली
1. पसेवा 2. नागदा 3. परमार-खीरी 4. तुंगनी 5. मेतवा
6. तकराओदा 7. भीलसुरी 8. माओरी 9. घट-बिलोद 10. बेतवा
11. बिलावली 12. अष्ट
VI. राजपूताना सौराष्ट्र
पत्थरन
जांबे का चरण
1. रंगपुर 2. आहर 3. प्रशास पाटन 4. लखबावल 5. लोथल 6. पिठाड़िया
7. रोजड़ी 8. अकोट
VII. नर्मदा प्रणाली
1. नवदटोली 2. महेश्वर 3. भगतराव 4. तेलोद 5. महगाम 6. हसनपुर
VIII. तापी प्रणाली
1. प्रकाश 2. बहली
IX. गोदावरी- प्रवर प्रणाली
1. जोरवे 2. नासिक 3. कोपरगांव 4. नेवासा 5. दमाबाद
X. भीम प्रणाली
1. कोरेगांव 2. चंदोली 3. उम्ब्रज 4. धनेगांव 5. अनाथी
6. हुंगनी 7. नागरहल्ली
XI. कर्नाटक
1. ब्रह्मगिरी 2. पिकलीहाल 3. मास्की

ताम्रपाषाण संस्कृति की विशेषताएँ

- **पूर्व-हड़प्पा चरण**, हालांकि, हड़प्पा चरण के बाद देश के कुछ हिस्सों में ताम्रपाषाण संस्कृति देखी गई।
- **मुख्य आहार** - मछली और चावल।
- **जली हुई ईंटों का उपयोग नहीं**।
- **मकान**- मिट्टी से बने हुए और गोलाकार या आयताकार।
- **सोने का उपयोग केवल सजावटी उद्देश्यों** के लिए।
- **कपास का उत्पादन** दक्कन क्षेत्र में होता था।
- **लोग बुनाई**, **कताई** और **तांबा गलाने** का अभ्यास करते थे।
- **ताम्रपाषाण बस्तियों के साक्ष्य** -
  - दक्षिण-पूर्वी राजस्थान,
  - पश्चिमी मध्य प्रदेश,
  - पश्चिमी महाराष्ट्र,
  - दक्षिण और पूर्वी भारत
- **पत्थरों से बने छोटे औजारों और हथियारों का प्रयोग**- पत्थर के ब्लेड और ब्लेडलेट
- **कृष्ण लोहित मृद्पात्र (BRW)** का उपयोग।

ताम्रपाषाण संस्कृति की अन्य विशेषताएँ

1. मृदभांड

- **सबसे पहले चित्रित मृदभांडो का उपयोग** किया।
- **चाक पर बने** हुए उत्कृष्ट **मृदभांड**
- **सजावटी उद्देश्यों के लिए** पुष्प, पशु, पक्षी और मछली के **रूपांकनों का उपयोग** किया गया था।

2. गहने

- **अर्द्ध-कीमती पत्थरों** जैसे स्टीटाइट, क्वार्ट्ज क्रिस्टल, कारेलियन आदि से बने **मोतियों का निर्माण** किया जाता था।
- **आम गहनों में** पायल, चूड़ियाँ और तांबे के मोती शामिल थे।

3. औजार

- आमतौर पर **सिलिसियस सामग्री से बने सूक्ष्म पाषाण उपकरण का उपयोग** किया जाता था।
- हथियारों के लिए **निम्न श्रेणी के कांस्य का प्रयोग**
- **खाद्य प्रसंस्करण के लिए** ग्राइंडर, मिलर और हथौड़े का उपयोग किया जाता था।

4. धार्मिक परम्पराएँ

- **देवी मां की पूजा** की जाती थी।
- **बैल धार्मिक पंथ का प्रतीक** था।
- **प्रजनन पंथ की पूजा** की जाती थी।
- **इनामगाँव** और **नेवादा** में पकी या बिना पकी मिट्टी दोनों से बनी **महिला मूर्तियों की खोज** की गई है
- **मंदिर का** कोई **प्रमाण नहीं।**

5. कृषि

- **काली कपास** मर्दा **क्षेत्र** में ताम्रपाषाणकालीन बस्तियां फली-फूली।
- **खरीफ** और **रबी** दोनों **फसलों** की खेती बारी-बारी से की जाती थी।
- **उगाई जाने वाली फसलें** - जौ, गेहूं, मसूर, काले चने, हरे चने, चावल और हरी मटर।
- **पशुधन** - भैंस, गाय, शिकार किए गए हिरण, बकरियां, भेड़ और सूअर।
- **ऊंट के अवशेष** मिले हैं।
- **हल** या **कुदाल** का कोई **प्रमाण नहीं**
- **छिद्रित पत्थर** की डिस्क और **खुदाई करने की छड़ो** की खोज

6. अंत्येष्टि

- **लोग मृत्युपर्यंत जीवन में विश्वास करते थे**।
- **महाराष्ट्र** में **मृतकों को उत्तर-दक्षिण स्थिति में** घरों के फर्श के नीचे कलशों में **दफनाया** जाता था।
- **पूर्वी भारत** में, **आंशिक अंत्येष्टि** की जाती थी।
- **दक्षिणी भारत** में, **मृतकों** को **पूर्व-पश्चिम स्थिति** में **दफनाया** जाता था।
- **मृतकों को इस दुनिया में लौटने से रोकने के लिए उनके पैर काटे जाते थे**।
- **दैमाबाद** में, **छेद किए हुए पेंदो वाले पांच कलश** मिले हैं।

महत्वपूर्ण ताम्रपाषाण संस्कृतियाँ और उनकी विशेषताएँ

संस्कृति	अवधि	विशेषताएँ	कार्यस्थल
आहङ संस्कृति	2100-1500 ईसा पूर्व	• सफेद वर्णक आकृतियों वाले काले और लाल मृदभांड • उगाई जाने वाली फसलें- चावल, ज्वार, बाजरा, हरी मटर, मसूर, हरे और काले चने। • पत्थरों से बने मकान मिले	• क्षेत्रीय केंद्र- गिलूण्ड • महत्वपूर्ण स्थल- आहङ और बालाथल
कयथा संस्कृति	2000-1880 ई.पू	• भूरे रंग की मोटी धारियों वाले लाल लेपवाले मृदभांड • किलेबंद बस्तियां	• चंबल और उसकी सहायक नदियाँ
मालवा संस्कृति	1700-1200 ई.पू	• काले एवं लाल मृदभांड जिसे मालवा मृदभांड कहा जाता है प्राप्त हुए है • उगाई जाने वाली फसलें - गेहूँ और जौ	• नवदाटोली, एरण, और नागदा - महत्वपूर्ण बस्तियों • नवदाटोली- सबसे बड़ी बस्ती
सावल्दा संस्कृति	2300-2000 ई.पू	• दक्कन में सबसे प्रारंभिक कृषक समुदाय	• महाराष्ट्र में धुले जिला
जोरवे संस्कृति	1400-700 ई.पू	• लाल रंग पर काले रंग से अलंकृत पात्र • टोंटीदार ताँबे के बर्तन मिले	• तापी, गोदावरी और भीम की घाटियाँ • दैमाबाद- सबसे बड़ा स्थल
प्रभास और रंगपुर संस्कृति	2000-1400 ई.पू	• लाल या टेराकोटा / मृणमूर्ति रंग वाले विभिन्न प्रकार के मिट्टी के बर्तन।	

अन्य ताम्रपाषाण स्थल

1. पूर्वी उत्तर प्रदेश

- खैराडीह

2. दक्षिण-पूर्वी राजस्थान

- गणेश्वर- हड़प्पा पूर्व ताम्रपाषाण संस्कृति को दर्शाता है।
- आहड़ - तांबे के औजारों की बहुतायत, पत्थर की कुल्हाड़ी या ब्लेड अनुपस्थित, प्रगलन और धातु से अवगत थे।

3. पश्चिम बंगाल (चावल के टुकड़े के साक्ष्य)

- महिषादल
- पांडु राजार धिबिक

4. पश्चिमी मध्य प्रदेश (गेहूं और जौ का उत्पादन)

- मालवा- सबसे उत्कृष्ट ताम्रपाषाण मृदभांड यहां खोजे गए हैं।
- कायथ- 29 तांबे की चूड़ियों और दो अनोखी कुल्हाड़ियों की खोज, कार्नीलियन और स्टीटाइट जैसे अर्द्ध-कीमती पत्थरों के हार।
- एरण- गैर-हड़प्पा संस्कृति को दर्शाता है।

5. पश्चिमी महाराष्ट्र

- जोरवे - सपाट, आयताकार तांबे की कुल्हाड़ियों का प्रमाण।
- दैमाबाद - सबसे बड़ा जोरवे सांस्कृतिक स्थल (20 हेक्टेयर), कांस्य माल।
- चंदोली - तांबे की छेनी।
- इनामगाँव - चावल के साक्ष्य, देवी माँ की मूर्तियाँ, ओवन के साथ बड़े मिट्टी के घर और गोलाकार गड्ढे वाले घर।
- नवदातोली - बियर और अलसी के प्रमाण।

6. बिहार

- नरहन
- चिरांद (मछली के काँटे के प्रमाण)

दक्षिण भारत की महापाषाण संस्कृति

महापाषाण (मेगालिथ)

- ग्रीक शब्द – मेगास = महान + लिथोस = पत्थर।
- **बड़े पत्थरों से बने स्मारक।**
- **शब्द का प्रतिबंधित उपयोग** किया गया है और **केवल स्मारकों** या संरचनाओं **के एक विशेष वर्ग के लिए लागू होता है**।
- **महापाषाण स्मारक -** केरल, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और महाराष्ट्र।

महापाषाण संस्कृतियों की उत्पत्ति और प्रसार

- महापाषाण स्मारक - **मनुष्य के सबसे व्यापक अवशेष**।
- **उत्पत्ति** - प्रारंभिक नवपाषाण काल में भूमध्य क्षेत्र- उन व्यापारियों द्वारा ले जाया गया जो अटलांटिक तट से होते हुए पश्चिमी यूरोप में धातुओं की तलाश में गए थे।
- **भारत** - द्रविड़ भाषियों के माध्यम से समुद्र के रास्ते पश्चिम एशिया से दक्षिण भारत पहुंचा।
- **लौह युगीन भारतीय महापाषाण** आमतौर पर **1000 ईसा पूर्व** के हैं।
- **भारतीय उपमहाद्वीप में आगमन** दो मार्गों से हुआ होगा-
  - ओमान की खाड़ी से भारत के पश्चिमी तट तक
  - ईरान से भूमि मार्ग द्वारा।
- भारत में **मुख्य संक्रेंट्रण** - दक्कन (गोदावरी नदी के दक्षिण में)।
- कुछ **सामान्य महापाषाण** प्रकार **उत्तर भारत**, **मध्य भारत** और **पश्चिमी भारत** में पाए जाते हैं। उदाहरण – झारखण्ड में सरायकेला; उत्तर प्रदेश के आगरा जिले में अल्मोड़ा जिले में देवधूरा और फतेहपुर सीकरी के पास खेरा; नागपुर; मध्य प्रदेश के चंदा और भंडारा जिले; दौसा, राजस्थान में जयपुर से 32 मील पूर्व में।
- **पाकिस्तान** में कराची के पास, हिमालय में लेह और जम्मू-कश्मीर में बुर्जहोम में भी पाया जाता है।
- भारत के **दक्षिणी क्षेत्र** में व्यापक वितरण- अनिवार्य रूप से एक दक्षिण भारतीय विशेषता।

महापाषाण संस्कृति के विभिन्न पहलू

समाज

- बड़ी **ग्रामीण** आबादी।
- **मकान - छप्पर वाली झोपड़ियाँ**, जो लकड़ी के खम्भों पर टिकी होती हैं।
- **हल की खेती** का प्रसार- **गहन खेती।**
- **प्रमुख जल संसाधनों से 10- 20 किमी की दूरी के भीतर** ग्राम पारगमन।
- **नदी घाटियों** और **काली मिट्टी, लाल रेतीली**-**दोमट मिट्टी** क्षेत्रों में **अधिकतम** संकेन्द्रण।
- **वर्षा**- 600-1500 मिमी।
- **स्मारक आकार** और **कब्र** की मूल्यवान वस्तुओं की प्रकृति में अंतर था जिससे **वर्ग विभाजन** का पता चलता हैं।

धार्मिक विश्वास और व्यवहार

- **मृतकों के लिए पूजा** की जाती थी।
- **मृत्युपर्यंत जीवन** में **विश्वास करते थे** अतः कब्र में सामान भी दफनाया जाता था।
- **पालतू जानवरों को** भी **दफनाया** जाता था।

- महापाषाणों में पशु, भेड़/बकरी जैसे घरेलू जानवरों और भेड़िये जैसे जंगली जानवरों की हड्डियों के होने से जीववाद में विश्वास स्पष्ट होता है।

राजनीति

महापाषाणकालीन कब्र -

- महापाषाणकालीन लोगों ने **विस्तृत और श्रमसाध्य मकबरों का निर्माण** किया।
- **मृत्युपर्यंत जीवन में विश्वास।**
- **कब्र में लकड़ी का सामान,** मिट्टी के बर्तन; हथियार, लोहा, पत्थर या तांबे के औजार; टेराकोटा, अर्द्ध-कीमती पत्थर, खोल, आदि गहनों में, कभी-कभार कान या नाक के गहने, बाजूबंद या कंगन और हीरे पाए जाते थे।
- **भोजन** - धान की भूसी और कुछ अन्य अनाज पिरोए हुए।
- **कब्रों में जानवरों के कंकाल के अवशेष** भी मिले हैं।

- लोग **आदिवासी** वंश के थे- मुखियाओं का प्रचलन।
- मुखिया को पेरूमकान कहा जाता था।
- अपने **कबीले के संपूर्ण व्यक्तिगत**, **भौतिक** और **सांस्कृतिक संसाधनों की कमान** उनके हाथ में होती थी।
- **शक्ति का वितरण** - सरल और **कोई पदानुक्रम नहीं।**
- **छोटे मुखिया सह-अस्तित्व** में रहते थे और एक-दूसरे के खिलाफ लड़ते थे।
- मुखियाओं के लिए विशेष समाधि।

प्रागैतिहासिक कालीन संस्कृति एवं विशेषताएँ

काल	संस्कृति के लक्षण	मुख्य स्थल	महत्व उपकरण एवं विशेषताएँ
निम्न पुरापाषाण काल	शल्क, गंडासा, खंडक, उपकरण, संस्कृति	पंजाब, कश्मीर, सोहन घाटी, सिंगरौली घाटी, छोटा नागपुर, नर्मदा घाटी, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश	हस्त कुठार एवं वाटिकाश्म उपकरण, होमो इरेक्टस के अस्थि अवशेष नर्मदा घाटी से प्राप्त हुए हैं
मध्य पुरापाषाण काल	खुरचनी, वेधक संस्कृति	नेवासा (महाराष्ट्र), डीडवाना (राजस्थान), भीमबेटका (मध्य प्रदेश) नर्मदा घाटी, बाकुंडा, पुरुलिया (पश्चिम बंग)	फलक, बेधनी, भीमबेटका से गुफा चित्रकारी मिली है |
उच्च पुरापाषाण काल	फलक एवं तक्षिणी संस्कृति	बेलन घाटी, छोटा नागपुर पठार, मध्य भारत, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश	प्रारंभिक होमोसेपियंस मानव का काल, हार्पून, फलक एवं हड्डी के उपकरण प्राप्त हुए |
मध्य पाषाण काल	सूक्ष्म पाषाण संस्कृति	आदमगढ़, भीमबेटका (मध्य प्रदेश), बागोर (राजस्थान), सराय नाहर राय (उत्तर प्रदेश)	सूक्ष्म पाषाण उपकरण बढ़ाने की तकनीकी का विकास, अर्धचंद्राकार उपकरण, इकधार फलक, स्थाई निवास का साक्ष्य पशुपालन |
नवपाषाण काल	पॉलिश्ड़ उपकरण संस्कृति	बुर्जहोम और गुफ्कराल लंघनाज(गुजरात), दमदमा (कश्मीर), कोल्डिहवा (उत्तर प्रदेश), चिरौंद (बिहार), पौयमपल्ली (तमिलनाडु), ब्रह्मगिरि, मस्की (कर्नाटक)	प्रारंभिक कृषि संस्कृति, कपड़ा बनाना, भोजन पकाना, मृदभांड निर्माण, मनुष्य स्थाई निवास बना, पाषाण उपकरणों की पॉलिश शुरू, पहिया, अग्नि का प्रचलन |

4 CHAPTER सिन्धु घाटी सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता)

सिंधु घाटी सभ्यता की खोज

- **दक्षिण एशिया की प्रथम नगरीय सभ्यता ।**
- **मेसोपोटामिया** और **मिस्र** की सभ्यताओं के **समकालीन।**
- **भारतीय उपमहाद्वीप** के **उत्तर-पश्चिमी भाग में विकसित**।
- **1853** - ए कनिंघम द्वारा एक हड़प्पा मुहर की खोज जिसमें एक बैल था।
- **1921** - दयाराम साहनी द्वारा हड़प्पा की खोज (सबसे पहले खोजा गया पुरातात्विक स्थल)। इसलिए इसे हड़प्पा सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है।
- **1922** - आरडी बनर्जी द्वारा मोहनजोदड़ो की खोज।
- मूलतः एक **नदी सभ्यता।**
- **कांस्य युगीन सभ्यता।**
- इस सभ्यता को **हड़प्पा सभ्यता इसलिए कहा जाता है** क्योंकि **सर्वप्रथम 1921** में **पाकिस्तान के** शाहीवाल जिले के **हड़प्पा नामक स्थल** से **इस सभ्यता की जानकारी** प्राप्त हुई।

विद्वानों के विचार	उत्पत्ति
ई.जे.एच. मकाय	सुमेर (दक्षिणी मेसोपोटामिया) से लोगों के प्रवास के कारण
डीएच गॉर्डन और मार्टिन व्हीलर	पश्चिमी एशिया से लोगों के प्रवास के कारण
जॉन मार्शल और वी. गॉर्डन चाइल्ड	मेसोपोटामिया सभ्यता का एक उपनिवेश जिसका विदेशी मूल था
एस. आर. राव और टी. एन. रामचंद्रन	आर्यों द्वारा निर्मित
स्टुअर्ट पिगट और रोमिला थापर	ईरानी-बलूची संस्कृति से उत्पन्न
डीपी अग्रवाल और अमलानंद घोष	ईरानी-सोठी संस्कृति से उत्पन्न

भौगोलिक विस्तार

- **क्षेत्रफल-** लगभग **13 लाख वर्ग किमी**
- **विस्तार-** सिंध, बलूचिस्तान, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, पश्चिमी उत्तर प्रदेश और उत्तरी महाराष्ट्र।
- **उत्तरतम स्थल-** जम्मू और कश्मीर में मांडा (नदी- चिनाब)
- **सुदूर दक्षिणी स्थल**- महाराष्ट्र में दैमाबाद (नदी- प्रवर)
- **पश्चिमी स्थल**- बलूचिस्तान में सुतकागेंडोर (नदी- दशक)
- **सुदूर पूर्वी स्थल**- उत्तर प्रदेश में आलमगीरपुर (नदी- हिंडन)

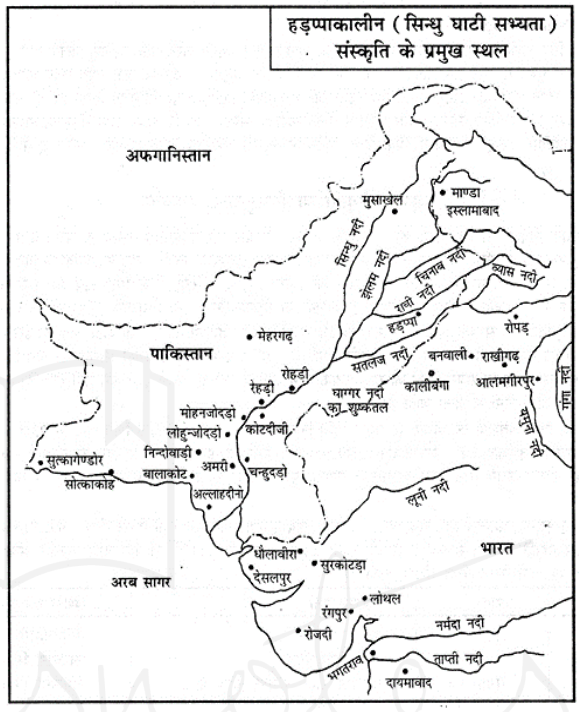

हड़प्पा सभ्यता के चरण

1. प्रारंभिक/पूर्व-हड़प्पा चरण (3500-2500 ईसा पूर्व)

- घग्गर-हाकरा नदी घाटी के आसपास विकसित।
- एक आद्य-शहरी चरण।
- गांवों और कस्बों का विकास देखा गया।
- विशेषता- एक केंद्रीकृत प्राधिकरण और शहरी जीवन।
- फसलें - मटर, तिल, खजूर, कपास आदि।
- स्थल- मेहरगढ़, कोट दीजी, धोलावीरा, कालीबंगा आदि।
- सबसे प्राचीन सिंधु लिपि 3000 ईसा पूर्व की है।

2. परिपक्व हड़प्पा चरण (2500-1800 ईसा पूर्व)

- हड़प्पा, मोहनजोदड़ो और लोथल जैसे बड़े शहरी केन्द्रों का विकास।
- सिंचाई की अवधारणा विकसित हुई।

3. उत्तर हड़प्पा चरण (1800-1500 ईसा पूर्व)

- क्रमिक पतन के संकेत, 1700 ईसा पूर्व तक अधिकांश शहर खाली हो गए थे।
- स्थल- मांडा, चंडीगढ़, संघोल, दौलतपुर, आलमगीरपुर, हुलास आदि।

हड़प्पा सभ्यता के महत्वपूर्ण स्थल

स्थल	नदी	विशेषताएँ
हड़प्पा (1921) पंजाब के मोंटगोमरी जिले में स्थित। "अन्न भंडार का शहर"।	रावी	• 6 अन्न भण्डारो की दो पंक्तियाँ। • यहां आर-37 और एच कब्रिस्तान मिले • ताबूत शवाधान • लाल बलुआ पत्थर से बनी नर धड़ प्रतिमा • तांबे की बैलगाड़ी • लिंगम और योनि के पाषाण प्रतीक • देवी माँ की टेराकोटा आकृति। • एक कमरे की बैरक • कांस्य के बर्तन। • गढ़(उठे हुए भू भाग पर) • पासा
मोहनजोदड़ो (1922) (मृतकों का टीला) - सिंध के लरकाना जिले में स्थित ।	सिंधु	• विशाल स्नानागार (आनुष्ठानिक स्नान के लिए, पत्थर का उपयोग नहीं, जली हुई ईंटों से निर्मित, बाहरी दीवारों और फर्शों पर डामर का प्रयोग • विशाल अन्न भंडार (मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत) • बुने हुए कपड़े का टुकड़ा • नाचती हुई लड़की की कांस्य प्रतिमा- कूल्हे पर दाहिना हाथ और बायां हाथ चूड़ियों से ढका हुआ है। • सूती कपड़ा • देवी माँ की मुहर • योगी की मूर्ति • पशुपति मुहर • दाढ़ी वाले मनुष्य की पत्थर की मूर्ति • मेसोपोटामिया की मुहरें • नग्न महिला नर्तकी की कांस्य छवि • शहर की 7 परतें → शहर का 7 बार पुनर्निर्माण किया गया।
लोथल (1957) (बंदरगाह शहर)- गुजरात रत्नों और आभूषणों का व्यापार केंद्र	भोगावो नदी	• 6 वर्गों में बंटा हुआ • तटीय शहर; मेसोपोटामिया के साथ समुद्री व्यापार संपर्क • जहाज बनाने का स्थान -गोदीबाड़ा (जहाजों के निर्माण और मरम्मत के लिए) • चावल की भूसी के साक्ष्य • दोहरा शावाधन • अग्नि वेदियां • जहाज का टेराकोटा मॉडल • माप के लिए हाथीदांत का पैमाना • फ़ारस खाड़ी की मुहर
चन्हुदड़ो (1931) - सिंध	सिंधु	• गढ़ के बिना एकमात्र शहर • मोतियों की फैक्ट्री, लिपस्टिक, स्याही के बर्तन बनाने के साक्ष्य। • ईंट पर कुत्ते के पंजे की छाप

		• बैलगाड़ी का टेराकोटा मॉडल • कांस्य की खिलौना गाड़ी
कालीबंगा (1953) (काली चूड़ियाँ)- राजस्थान	घग्गर	• अग्नि वेदियां • पकी हुई ईंटों का कोई प्रमाण नहीं , मिट्टी की ईंटों का प्रयोग • कुओं वाले घर • जल निकासी व्यवस्था नहीं • पूर्व-हड़प्पा और हड़प्पा चरण दोनों के प्रमाण दिखते है
धोलावीरा (1990-91) - गुजरात	लूनी	• जल संचयन प्रणाली • तूफानी जल निकासी व्यवस्था • स्टेडियम • 10 अक्षरों की नेमप्लेट (सबसे बड़ा IVC शिलालेख) • 3 भागों में विभाजित होने वाला एकमात्र शहर।
रंगपुर (1931) (गुजरात)	महर	• पूर्व + परिपक्व हड़प्पा चरण के अवशेष • पत्थर के टुकड़े के साक्ष्य
बनावली (1973-74) (हिसार, हरियाणा)	सरस्वती	• पूर्व + परिपक्व + उत्तर हड़प्पा चरण • हल का टेराकोटा मॉडल • कोई जल निकासी प्रणाली नही • जौ के दाने • लापीस लाजुली (राजवर्त) • त्रिजय सडको वाला एकमात्र स्थल
राखीगढ़ी (1963) (हरियाणा)		• भारत में सबसे बड़ा आईवीसी स्थल • एक छिन्न हुई महिला आकृति
सुरकोटडा (1964) (कच्छ, गुजरात)		• घोड़े के अवशेष और कब्रिस्तान • भांड शवाधान • अंडाकार कब्र
अमरी (1929) (सिंध, पाकिस्तान)	सिंधु	• गैंडे के साक्ष्य
रोपड़ (पंजाब, भारत)	सतलज	• आजादी के बाद खोदा जाने वाला पहला स्थल • कुत्ते को इंसान के साथ दफनाये जाने के साक्ष्य • अंडाकार गर्त शवाधान • ताम्बे की कुल्हाड़ी
आलमगीरपुर (उत्तर प्रदेश)	यमुना	• टूटी हुई तांबे की ब्लेड
दैमाबाद (महाराष्ट्र)	प्रवरा	• कांस्य चित्र (गैंडे, बैल, हाथी और रथ के साथ सारथी)

सनौली-

वर्ष 2005 में सनौली उत्खनन 1.0

- 116 कब्रों की खोज की गई।
- **ताम्रपाषाण काल में भारत के सबसे बड़े ज्ञात कब्रिस्तान में से एक के रूप में संदर्भित।**
- **शवाधान** सिंधु घाटी सभ्यता से **अलग** हैं।
- **शरीर के पास व्यवस्थित फूलदान**, **कटोरे** और **बर्तन।**
- **सैनिकों के शवों** के साथ **दबे बर्तनों में चावल** के साक्ष्य मिले।
- **8 एंथ्रोपोमोराफिक आंकड़े** (कुछ ऐसा जो इंसानों जैसा दिखता है)।
- मानवरूपी आकृतियाँ मिली।

वर्ष 2018 में सनौली उत्खनन 2.0

- **2018** में फिर से **प्रकाश में आया** जब एक **किसान ने खेत की जुताई करते समय** जमीन में **पुरावशेष** पाए जाने **की सूचना दी।**
- **घोड़े द्वारा खींचे जाने वाले रथ** (लगभग 5000 वर्ष पुराने) पाए गए।

- **तांबे की तलवार, युद्ध ढाल** आदि जैसे कई हथियार **पाए गए**।
- इस बार **मृदभाण्डों** के साथ **लकड़ी के चार पैरों वाले ताबूत**
- **जानवरों को काबू करने के लिए चाबुक** मिला है, जिसका अर्थ है कि यहाँ रहने वाली जनजाति जानवरों को नियंत्रित करती थी।
- **महिला** + **पुरुष योद्धा** भी तलवारों के साथ दबे पाए गए हैं।
- हालांकि **दफनाने से पहले उनके टखनों के नीचे के पैरों को काट दिया गया था**।

मृदभाण्ड:

- **गैरिक मृदभांड** (OCP) संस्कृति।
- **उत्तर परिपक्व हड़प्पा संस्कृति के समान** लेकिन कई अन्य पहलुओं में इससे अलग है।

सिंधु घाटी सभ्यता की विशेषताएँ

1. **नगर नियोजन-**
   - **किलाबंधित**
   - **सुनियोजित सड़कें**
   - कस्बों में **उन्नत जल निकासी** व्यवस्था।
   - **शहर**- दो या दो से अधिक भाग।
     - **पश्चिमी भाग** - छोटा लेकिन ऊँचा - गढ़- शासक वर्ग के कब्जे में।
     - **पूर्वी भाग-** बड़ा लेकिन निचला- आम या कामकाजी लोगों का निवास -ईंटों से बने घर।
   - **हड़प्पा** और में **मोहनजोदाडो** दोनों में एक **गढ़** था। (इन दो स्थलों को आईवीसी की राजधानी कहा जाता **है**)
   - कस्बों में एक आयताकार ग्रिड पैटर्न या जिसमें **सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं**।
   - **1 या 2 मंजिला मकान** थे।
   - **मंदिर या महल** जैसी कोई बड़ी स्मारकीय/ एतिहासिक- संरचना **नहीं** पायी गयी है ।
   - **निर्माण** के लिए **पकी** और कच्ची **ईंटों** और **पत्थरों** का **उपयोग।**
   - **मकान कच्ची की ईंटों** से बने होते थे, जबकि **जल निकासी प्रर्णाली पक्की ईंटों से** बनाई जाती थी।
2. **विशाल स्नानागार-**
   - गढ़ के टीले में
   - **ईंटों से बना** एक टैंक जिसका उपयोग स्नान के लिए किया जाता था।
   - टैंक तक जाने के लिए सीडियाँ थी।
   - **माप-** 11.88 मीटर लम्बा 7.01 मीटर चौड़ा और 2.43 मीटर गहरा।
   - **टैंक का निचला भाग जली हुई ईंटों से** बना था।
   - **बगल के कमरे में** एक **बड़े कुएं** से पानी निकाला जाता था , जिसे **नाले में खाली** कर दिया जाता था।
   - कपड़े बदलने हेतु साइड रूम।
3. **धान्यागार-**
   - **मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत**, जो 45.71 मीटर लंबी और 15.23 मीटर चौड़ी।
   - **हड़प्पा**- 15.23 मीटर लंबी और 6.09 मीटर चौड़ी नदी के किनारे स्थित 6 अन्न भंडारों की दो पंक्तियों की उपस्थिति।
   - वृत्ताकार ईंट के चबूतरे की पंक्तियाँ मिलीं जो **अनाज ताड़ने के लि**ए थीं, (वहाँ मिले **गेहूँ और जौ के साक्ष्य** से पता चलता हैं।)
   - **कालीबंगा**- दक्षिणी भाग में, ईंट से बने चबूतरे की उपस्थिति जो शायद अन्न भंडार के लिए उपयोग किए जाते थे।
4. **जल निकासी व्यवस्था-**
   - हर घर में अपना **आंगन, निजी कुआं और हवादार स्नानागार** होता था।
   - इन **घरों का पानी गली की नालियों में जाता था** जो या तो ईंटों या पत्थर की स्लैब से ढके होते थे।
   - हड़प्पा के लोग **स्वास्थ्य और स्वच्छता पर बहुत अधिक ध्यान** देते थे ।
5. **कृषि-**
   - सिंधु नदी में वार्षिक बाढ़ के कारण **सिंधु क्षेत्र उपजाऊ** था।
   - जिसके कारण मैदानी इलाकों में समृद्ध **जलोढ़ मिट्टी का जमाव** हुआ (सिंध क्षेत्र की उर्वरता का उल्लेख सिकंदर के इतिहासकार ने चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में भी किया था)
   - जली हुई इंटो से बनी दिवारो की उपस्थिति से प्रमाण मिलता है कि क्षेत्र बाढ ग्रस्त था।
   - **बीज नवंबर** में **बोए** जाते थे और **अप्रैल** में फसल काटी जाती थी ।
   - **कटाई** के लिए **पत्थर के दरांती** का **उपयोग।**
   - **नहरों द्वारा सिंचाई** का **अभाव।** हालाँकि, शोरतुग़ई (अफगानिस्तान) में नहरों के साक्ष्य खोजे गए हैं।
   - **पानी जमा करने के लिए अफगानिस्तान** और **बलूचिस्तान** के कुछ हिस्सों में नालियों से घिरे **गबरबंद** या **नालों का निर्माण** किया गया।
   - **कालीबंगा** के पूर्व-हड़प्पा चरण में **जुताई के साक्ष्य** मिले हैं ।
   - **फसलें**- दो प्रकार के गेहूं और जौ, राई, तिल, खजूर, सरसों और मटर। (बनावली में जौ के साक्ष्य, लोथल में चावल के साक्ष्य)।

- **धोलावीरा** में **जलाशयों का उपयोग** कृषि के लिए पानी के भंडारण के लिए किया जाता था।
- दुनिया में **कपास का उत्पादन करने वाले पहले लोग सिंधु** थे। यूनानियों ने इसे सिंधन (सिंध से प्राप्त) कहा।
- **हल का टेराकोटा मॉडल- बनावली** में खोजा गया।
- **वस्तु विनिमय** के लिए **अनाज का उपयोग।** किसान ने अनाज पर कर का भुगतान करते थे और इनका उपयोग मजदूरी के भुगतान के लिए किया जाता था।
- इस अवधि के दौरान **दोहरी फसल की प्रथा** शुरू हुई।

6. <u>पशुपालन-</u>

- लोगों ने **पशुचारण** का **अभ्यास** किया।
- वे **भेड़, मवेशी, बकरी, सूअर और भैंस** जैसे जानवरों को पालते थे।
- **बिल्लियों** और **कुत्तों** को भी पालतू बनाया गया था।
- **हाथियों** को भी पाला गया - **गुजरात।**
- **कूबड़ वाला बैल** - हड़प्पावासियों का पसंदीदा
- **ऊंट** और **गधे** - भार ढोने वाले पशु।
- **खरगोश**, **जंगली पक्षी**, **कबूतर** भी मौजूद थे।
- **गैंडे के** सा**क्ष्य**- अमरी, लोथल में पाए गए घोड़े का एक टेराकोटा मॉडल और घोड़े के अवशेष सुरकोटडा में पाए गए।

7. <u>व्यापार एवं वाणिज्य-</u>

- **वस्तु विनिमय प्रणाली** प्रचलित।
- **पत्थर, धातु, खोल** आदि का **उपयोग करके व्यापार** किया जाता था।
- **मेसोपोटामिया के साथ व्यापारिक संपर्क** सुमेर, सुसा और उर में पाए गए हड़प्पा मुहरों से स्पष्ट होता है।
- **लोथल** के **बंदरगाह का उपयोग कपास के निर्यात** के लिए किया जाता था।
- **निप्पुर** से मिली **मुहर** में **हड़प्पा लिपि** और एक **गेंडे का चित्रण** है।
- **क्यूनिफॉर्म शिलालेख मेसोपोटामिया** और **हड़प्पावासियों के बीच व्यापारिक संपर्कों का उल्लेख** करता है। इसमें "**मेलुहा**" नाम का उल्लेख है जो **सिंधु क्षेत्र** को और दो व्यापारिक स्टेशनों- दिल्मन और माकन को दरकिनार करते हुए मेसोपोटामिया के साथ इसके व्यापारिक संपर्क को **संदर्भित करता है।**
- **हड़प्पा की मुहरें फारस की खाड़ी के प्राचीन स्थलों से प्राप्त** हुई हैं।
- **हड़प्पावासियों द्वारा आयात की जाने वाली प्रमुख वस्तुएं -** सोना, चांदी, तांबा, टिन, लैपिस लाजुली, सीसा, फ़िरोज़ा, जेड, कारेलियन और नीलम।
- हड़प्पा के **बाह्य व्यापार को प्रमाणित करने वाले साक्ष्य-**
  - **मोहनजोदड़ो से बेलनाकार मुहरों की खोज**,
  - **हड़प्पावासियों द्वारा मेसोपोटामिया के सौंदर्य प्रसाधनों का उपयोग**,
  - **हड़प्पा में खोजे गए विदेशी दुनिया में प्रचलित ताबूत शवाधान** , और
  - **मेसोपोटामिया की मुहरों पर कूबड़ वाले बैल की आकृति।**

बाह्य व्यापारिक मार्ग-

- सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों ने **फारस, मेसोपोटामिया और चीन** जैसी कई अलग-अलग सभ्यताओं **के साथ व्यापार** किया।
- **अरब की खाड़ी** क्षेत्र, **एशिया** के **मध्य भागों**, **अफगानिस्तान** के कुछ हिस्सों और **उत्तरी** और **पश्चिमी भारत में व्यापार** करने के लिए भी जाना जाता है।

- व्यापार कि जाने वाली समग्री

- **टेराकोटा** के बर्तन, **मनके**, **सोना**, **चांदी**, **रंगीन रत्न** जैसे फ़िरोज़ा और लैपिस लाजुली, धातु, चकमक पत्थर, **सीपियाँ** और **मोती।**

आंतरिक व्यापार मार्ग -

- **बलूचिस्तान**, **सिंध**, **राजस्थान**, **चोलिस्तान**, **पंजाब**, **गुजरात** और **ऊपरी दोआब**
- **प्रमुख व्यापार मार्ग -**
  - सिंध और दक्षिण बलूचिस्तान
  - सिंधु के मैदान और राजस्थान
  - सिंध और पूर्वी पंजाब
  - पूर्वी पंजाब और राजस्थान
  - सिंध और गुजरात
- **प्रारंभिक हड़प्पा काल** में प्रमुख मार्ग- सिंध-बलूचिस्तान
- **परिपक्व हड़प्पा काल** में प्रमुख मार्ग
  - **संभवत: नदी व्यापार।**
  - तटीय मार्ग **गुजरात को मकरान तट से जोड़ते हैं।**

8. <u>भार और मापन-</u>

- वज़न मापन के लिए एक **द्विआधारी प्रणाली** का पालन किया।
- **दशमलव प्रणालियों से अवगत**।
  - **अनुपात की इकाई** 16 समकक्ष से 13.64 ग्राम थी।
  - **16 छटाँक** = 1 सेर और **16 आने** = 1 रुपये के बराबर थे।

- **कच्चे माल के प्रमुख स्रोत -**
  - **चूना पत्थर -** सुक्कुर और रोहडी के चूना पत्थर की पहाड़ियों खनन।
  - **ताम्बा -** खेतड़ी, राजस्थान से ताम्रपाषाण गणेश्वर-जोधपुर संस्कृति और हड़प्पा सभ्यता के बीच संबंध।
  - **टिन -** तोसम (हरियाणा), अफगानिस्तान और मध्य एशिया

- **सोना -** ऊपरी सिंधु या कर्नाटक के कोलार क्षेत्रों की रेत से।
  - पिकलीहल के मनके
  - **अर्द्ध कीमती पत्थर** - गुजरात और अफगानिस्तान, मनका निर्माण के लिए प्रयुक्त

9. शिल्प उत्पादन

- बर्तन, नाव, मनके, मुहरें, टेराकोटा की वस्तुओं का **निर्माण** किया जाता था
- **ईंट की चिनाई** की कला जानते थे
- **धातुओं की रंगाई** और उनके **प्रगलन** की कला **जानते** थे
- **सीसा, कांस्य, टिन का** बड़े पैमाने पर **उपयोग**

(i) प्रस्तर प्रतिमा -

- **परिष्कृत पत्थर, कांस्य या टेराकोटा की मूर्तियाँ**।
- **हड़प्पा** और **मोहनजोदड़ो** में पाई गई पत्थर की मूर्तियाँ - **त्रि-आयामी खंडों** के लिए उत्कृष्ट उदाहरण ।
- **उदा**. शेलखड़ी से बने दाढ़ी वाले पुजारी और लाल बलुआ पत्थर से बना नर धड़।

(ii) कांस्य कास्टिंग

- **'लॉस्ट वैक्स' तकनीक का उपयोग** करके बनाई गई कांस्य मूर्तियाँ।
- इसमें, **मोम की आकृतियों को पहले मिट्टी के लेप से ढक दिया जाता है** और **सूखने दिया** जाता है - **मोम** को **गर्म** किया जाता है और मिट्टी के आवरण में बने **एक छोटे से छेद के माध्यम से बाहर निकाला जाता है**। इस प्रकार बनाया गया **खोखला साँचा** पिघले हुए धातु से भर दिया जाता हैं । जो वस्तु का मूल आकार लेता है।
- **धातु** के **ठंडा होने के बाद**, **मिट्टी** का आवरण **पूरी तरह से हटा** दिया जाता है।
- **धातु ढलाई** एक **सतत परंपरा** प्रतीत होती है।
- **प्रमुख केंद्र-** दैमाबाद, महाराष्ट्र

(iii) टेराकोटा

- **पत्थर और कांसे की मूर्तियों की तुलना में मानव रूपों के प्रतिनिधित्व अपरिपक्व होता हैं**।
- **गुजरात** और **कालीबंगा** में अधिक **यथार्थवादी।**
- **सबसे महत्वपूर्ण** - देवी माँ।

(iv) मुहर

- लगभग **200 मुहरों की खोज** की गई
- **ज्यादातर स्टीटाइट से बनी** । कुछ टेराकोटा, सोना, एगेट , चर्ट, हाथी दांत से बनी ।
- अधिकांश मुहरें 2 x 2 आयाम के साथ **चौकोर आकार** की थीं
- **मुख्य** रूप से **व्यावसायिक उद्देश्यों** के लिए उपयोग की जाती थी, हालांकि इनका उपयोग **ताबीज के रूप में भी** किया जाता था।
- **मुहरें चित्रात्मक** थीं जिनमें बाघ, हाथी, बैल, भैंस, गैंडा, बकरी, गौर और अन्य जानवरों के चित्र शामिल थे।
- **मुहरों की लिपि का अर्थ** अब तक **नहीं निकाला गया है**
- **सबसे महत्वपूर्ण मुहर**- मोहनजोदड़ो से पशुपति महादेव मुहर
- **लोथल**- **फारस की खाड़ी की मुहरें** मिली हैं।

(v) मनके

- **सोने, चांदी, तांबे, कांस्य** और **अर्द्ध कीमती पत्थरों** से बने ।
- मुख्य रूप से **बेलनाकार**
- **लोथल और धोलावीरा**- मनके बनाने की दुकान

10. धातु, उपकरण और हथियार-

- **तांबे-कांस्य के औजार** बनाना जानते थे।
- उन्होंने **तीर, भाला, सेल्ट और कुल्हाड़ी** जैसे हथियार बनाने **के लिए चकमक पत्थर की** (रोहड़ी चेर्ट से बने), **तांबे** और **हड्डियों**, **हाथीदांत** के औजारों **का उपयोग** किया।
- **लोहे का ज्ञान नहीं**

11. लिपि-

- **पहली बार 1853 में** खोजी गयी ।
- **पूरी लिपि पहली बार 1923 में** खोजी गई थी, लेकिन यह अभी भी अनसुलझी है।
- **सबसे बड़े हड़प्पा शिलालेख** में **26 संकेत** हैं और ज्यादातर मुहरों पर दर्ज हैं।
- **लिपि –** चित्रात्मक
- **लेखन की कला से अवगत –** बाएँ से दाएँ लेखन

12. मृदभाण्ड-

- **चाक** और **अच्छी तरह से पके हुए मृदभांडों का उपयोग**
- कृष्ण लोहित मृदपात्र ।
- **भंडारण जार**, **कटोरे**, **व्यंजन**, **छिद्रित जार**, आदि के रूप में **उपयोग** किया जाता है।
- पीपल के पत्ते, मछली के शल्क, प्रतिच्छेदन, जिगजैग पैटर्न, क्षैतिज बैंड, पुष्प और जीव ज्यामितीय डिजाइन आदि का उपयोग।
- **आधार समतल** था।
- लाल रंग के मृदभाण्डों को काले रंग के डिजाइनों से चित्रित किया गया था।
- **हड़प्पा -पूर्व चरण में 3 मृदभांड संस्कृतियां-**

- **नाल संस्कृति** (पीले रंग, पीले और नीले रंग के साथ चित्रांकन)
- **झोब संस्कृति** (लाल मृदभाण्ड और काले रंग में चित्र)
- **क्वेटा** (पीले मृदभाण्ड, काले रंग के द्वारा साथ चित्रांकन)।

13. <u>धर्म-</u>

- **धर्मनिरपेक्ष समाज**
- **देवी माँ की पूजा** की जाती थी - शक्ति या देवी माँ के रूप में पहचाने जाने वाली **अर्द्ध-नग्न टेराकोटा मूर्तियों की खोज** की गई, हड़प्पा में **एक मुहर की खोज** की गई जिसमें **पृथ्वी / देवी माता** को उनके गर्भ से उगने वाले पौधे के साथ दर्शाया गया है।
- **पशुपति महादेव / प्रोटो शिव की पूजा** की जाती थी- एक त्रिमुखी पुरुष भगवान, योग मुद्रा में बैठे और दायीं ओर गैंडा और भैंस से घिरे हुए **,** बाईं ओर हाथी और बाघ से घिरे हुए उनके पैरों के समीप दो हिरण।
- **प्रकृति को पूजते थे -** पीपल के पेड़ को सबसे पवित्र माना जाता था।
- **पूजे जाने वाले जानवर** - कूबड़ वाला बैल, भैंस, बाघ पक्षी और गैंडा।
- **पौराणिक पशुओं की पूजा करते थे**।
  - अर्ध-मानव और अर्ध-पशुवर जीव।
- **मंदिर-पूजा का कोई प्रमाण नहीं**।
- **जादू, आकर्षण और बलिदान** में **विश्वास**।
  - **बलिदानों को दर्शाने वाली मुहरें**।
  - **कालीबंगा**, **बनावली** और **लोथल** की **अग्निवेदी।**

14. <u>राजनीतिक संगठन-</u>

- इतिहासकारों के अनुसार, **व्यापारियों के एक वर्ग द्वारा शासित**।
- **एक दूसरे से स्वतंत्र शहर**।
- उनके **बीच कोई संघर्ष नहीं**।
- लोगों की **बुनियादी नागरिक सुविधाओं की देखभाल के लिए नगर निगम** जैसा संगठन।

सभ्यता का पतन

- **1900 ईसा पूर्व के बाद** पतन शुरू।
- **अन्य स्थलों पर हड़प्पा संस्कृति धीरे-धीरे फीकी** पड़ गई।
- **उत्तर हड़प्पा चरण** /उप-सिंधु संस्कृति- **कृषि**, **पशुपालन**, **शिकार** और **मछली पकड़ने पर निर्भर थी।**
- पश्चिम एशियाई केंद्रों के साथ **व्यापार संपर्कों के अंत** के साक्षी बने।
- **लगभग 1200 ईसा पूर्व**, **पंजाब** और **हरियाणा** के कुछ स्थलों पर, वैदिक संस्कृति से जुड़े **धूसर मृदभांड** और **चित्रित धूसर मृदभांड** पाए गए।

पतन के बाद पश्चिमी पंजाब और बहावलपुर में **झूकर संस्कृति का विकास** हुआ। इसे **ग्रेवयार्ड-एच संस्कृति भी कहा जाता था।सिंधु घाटी सभ्यता का पतन**

इतिहासकार	पतन के कारण
गॉर्डन चाइल्ड और स्टुअर्ट पिगट	बाहरी आक्रमण
एच टी लैंब्रिक और एम एस वत्स	अस्थिर नदी प्रणाली
कैनेडी	प्राकृतिक आपदाएं
स्टीन और घोष	जलवायु परिवर्तन
आर मोर्टिमर व्हीलर और गॉर्डन	आर्यन आक्रमण
रॉबर्ट राइक्स और डेल्स	भूकंप
सूद और डीपी अग्रवाल	नदी का सूखना
फेयरचाइल्ड	पारिस्थितिक असंतुलन
शेरीन रत्नागर	मेसोपोटामिया के साथ व्यापार में गिरावट
एस.आर.राव और मैके	बाढ़

" यह भी उद्धृत किया गया है कि **आग और मलेरिया** जैसे संचारी रोगों का प्रसार भी **सिंधु घाटी सभ्यता** के पतन के कारण थे।"

5 CHAPTER वैदिक काल (1500-600BC)

आर्यों की मूल पहचान

- वैदिक युग की **शुरुआत भारत-गंगा के मैदानों पर आर्यों के आधिपत्य से हुई**।
- **आर्य** मूल रूप से **स्टेपी/ मैदानी क्षेत्र में रहते थे।**
- बाद में वे **मध्य एशिया चले गए** और फिर लगभग **1500 ईसा पूर्व भारत के पंजाब क्षेत्र में आ गए**। ऐसा माना जाता है कि उन्होंने **खैबर दर्रे से भारत में प्रवेश** किया था।
- वे **सबसे पहले सप्त सिंधु क्षेत्र** (सात नदियों की भूमि) **में आकर बसे**। ये सात नदियाँ - सिंधु, ब्यास, झेलम, परुष्नी (रावी), चिनाब, सतलज और सरस्वती।
- **भाषा**- इंडो-यूरोपीय।
- **औजार** - सॉकेटेड कुल्हाड़ी, कांस्य की कतार और तलवारें।
- **घोड़ों ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई** (दक्षिणी ताजिकिस्तान और पाकिस्तान में स्वात घाटी से घोड़ों के पुरातात्विक साक्ष्य खोजे गए)।
- वैदिक काल **1500 ईसा पूर्व और 600 ईसा पूर्व के बीच का** था।
- **आर्यों की मूल उत्पति -** विभिन्न विशेषज्ञों के मध्य बहस का विषय।

विभिन्न विद्वानों के अनुसार आर्यों का मूल निवास	
आर्यों का मूल निवास	**विद्वान**
आर्कटिक क्षेत्र	बाल गंगाधर तिलक
तिब्बत	स्वामी दयानंद सरस्वती
मध्य एशिया	मैक्स म्यूलर
तुर्किस्तान	हुन फेल्डो
बैक्ट्रिया	जे.सी.रॉड
सप्त सिंधु	डॉ अविनाश चंद्र दास और डॉ संपूर्णानंद
कश्मीर और हिमालयी क्षेत्र	डॉ. एल.डी.कला
यूरोप	सर विलियम जोन्स
मैदान/ स्ट्रेपी	पी. नेहरिंग
पश्चिमी साइबेरिया	मॉर्गन

वैदिक साहित्य

- **वैदिक सभ्यता के बारे में जानकारी** का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत।
- **वेद** शब्द का अर्थ है **ज्ञान।**
- वैदिक साहित्य **कई शताब्दियों में विकसित हुआ** और इसे **पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक रूप से हस्तांतरित किया गया**।
- उन्हें बाद में **संकलित और लिखा गया** था,
- **सबसे पुरानी जीवित पांडुलिपि 11वीं शताब्दी** की है।
- **4 वेद** और **प्रत्येक के 4 भाग** हैं - संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद।
- **वेद**

ऋग्वेद	• यह **वेदों में सबसे प्राचीन** है। • **1028 स्तोत्रों का संग्रह**। • **दस मंडलों** या पुस्तकों **में विभाजित**। • **भाषा**- वैदिक संस्कृत। • **उत्पत्ति**- 1500-1000 ई.पू. । • **स्तोत्र सूक्त के रूप में जाने जाते हैं** जो आमतौर पर अनुष्ठानों में उपयोग किए जाते हैं। • ईश्वरीय आनंद की तलाश में **देवी-देवताओं को समर्पित**। • **इंद्र- प्रमुख देवता** (स्वर्ग का राजा)। • **अन्य देवता**- आकाश देव**,** वरुण, अग्नि देव और सूर्य देव • **मंडल 2 - 7** - ऋग्वेद का **सबसे पुराना हिस्सा**, उन्हें "**पारिवारिक पुस्तकें**" कहा जाता है क्योंकि वे संतों / ऋषियों के विशेष परिवारों से संबंधित हैं। • **मंडल 8** - ज्यादातर कण्व वंश द्वारा रचित। • **मंडल 9** - भजन पूरी तरह से सोम को समर्पित हैं। • **मंडल 1** - इंद्र और अग्नि को समर्पित। • **मंडल 10** - नदियों की स्तुति करने वाला नदी स्तुति सूक्त इसमें पाया जाता हैं। • **एकमात्र जीवित पुनरावृत्ति**- शाकल शाखा। • **उपवेद**- आयुर्वेद